हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

11 भूना के फुटबॉलर करनाल में छाए, झज्जर को हराकर बने स्टेट चैम्पियन

12 ठंड से बच्चों की सेहत पर असर, सिविल अस्पताल में बढ़ी ओपीडी

खबर संक्षेप

महिला अवैध शराब व लाहण सहित काबू

फतेहाबाद। अवैध शराब तस्करों पर शिकंजा कसते हुए टोहाना पुलिस ने एक महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है। महिला को न्यायालय के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान तोषा बाई, पत्नी चरणजीत सिंह निवासी गांव ललौदा के रूप में हुई है।

नशीली गोलियां मिलने पर मेडिकल स्टोर सील

सिरसा। पुलिस ने मेडिकल नशे के खिलाफ शिकंजा करते हुए गांव चोरमार स्थित एक मेडिकल से नशे में प्रयोग होने वाली गोलियां बरामद होने पर मेडिकल को सील कर दिया है। सीआईए प्रभारी डबवाली राजपाल ने शनिवार को बताया कि मेडिकल संचालक के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली कि गांव चोरमार स्थित एक मेडिकल स्टोर पर नशे में प्रयुक्त होने वाली गोलियां बेची जा रही है। जिस पर पुलिस टीम ने छापेमारी की।

मुनीम से मारपीट व लूटपाट करने पर तीसरा युवक काबू

फतेहाबाद। अनाज मण्डी रतिया के एक मुनीम से मारपीट कर नकदी व मोबाइल छीनने के मामले में रतिया पुलिस ने फरार चल रहे एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सागर पुत्र कृष्ण चंद, निवासी वार्ड नंबर 12, रतिया के रूप में हुई है। आरोपी से एक मोटरसाइकिल बरामद की गई, जिसका उपयोग वारदात में किया गया था।

प्रदेश के सिख समुदाय को कमेटी बनाकर दी स्वायत्तता : मुख्यमंत्री

चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी का जीवन संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा स्त्रोत। केंद्र व प्रदेश की सरकार उन्हीं के द्वारा दी गई शिक्षाओं का मार्गदर्शन करते हुए काम कर रही है। यही वजह है कि 2022 में हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गठित कर हरियाणा के सिख समुदाय को हरियाणा में स्वायत्तता दी। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि बेशक आज एआई, रोबोटिक, अल्ट्रामोड्राइजेशन का युग है, लेकिन भारत को सुपर पावर बनाने में ज्ञान, तकनीक, अध्यात्मिकता, नैतिक आधार, दृढ़ता व बहादुरी भी ताकत देगी जो श्री गुरु तेग बहादुर जी ने संदेश दिया है। मुख्यमंत्री शनिवार को चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय में 'श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन और दर्शन' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इससे पहले मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई गुरुओं के जीवन पर आधारित पेंटिंग प्रदर्शनी व फैशन टेक्नोलॉजी विभाग की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री की पुस्तक का विमोचन किया। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने घोषणा की कि हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर जी के शहीदी दिवस पर उनसे प्रेरणा लेते हुए चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय में श्री गुरु तेग बहादुर जी अध्ययन पीठ स्थापित की जाएगी, जहां विद्यार्थी उनके जीवन और दर्शन पर अनुसंधान कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350 वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 1 नवंबर से कार्यक्रम शुरू हो चुके हैं, जो 25 नवंबर तक चलेंगे। मुख्य समारोह कुरुक्षेत्र में आयोजित किया जाएगा।

सिरसा। सीडीएलयू में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करते मुख्यमंत्री।

चार पवित्र यात्राएं निकाली जाएंगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि चार पवित्र यात्राएं निकाली जाएंगी, जिनमें से पहली पवित्र यात्रा का शुभारंभ आज सिरसा जिले के रोड़ी से किया गया है। मुख्यमंत्री ने देशभर से आए संतों, विद्वानों और शोधकर्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे महापुरुष के जीवन और संदेश पर मनन कर रहे हैं, जिन्होंने यह सिखाया कि धर्म केवल अपना धर्म बचाने का नाम नहीं, बल्कि पूरे विश्व के नैतिक विवेक को बचाने का दायित्व है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जब मानवता तकनीकी युग में प्रवेश कर चुकी है, तब भी श्री गुरु तेग बहादुर जी के आदर्श भारत को दिशा दे रहे हैं। 21वीं सदी में भारत की असली शक्ति तकनीक नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक दृढ़ता और साहस में निहित है। उन्होंने कहा कि जब युवाओं के सामने अति-प्रतिस्पर्धा, मानसिक दबाव और तुलना की संस्कृति जैसी चुनौतियाँ हों, तब श्री गुरु तेग बहादुर जी और उनके चारों शहीद शिष्य नई पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तंभ का कार्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत गुरु महाराज जी की शिक्षाओं के अनुरूप मानवता के मार्गदर्शन का कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत आज 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के सिद्धांत पर आगे बढ़ रहा है, जो गुरु परंपरा की भावना का ही विस्तार है।

रतिया। श्रद्धालुओं के साथ रवाना होते चेयरमैन रविन्द्र बलियाला।

शहीदी दिवस पर रोडी से ऐतिहासिक यात्रा शुरू

रतिया। हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और हरियाणा सरकार द्वारा गुरु श्री तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में भव्य और ऐतिहासिक यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। हरियाणा सरकार के अनुसूचित जाति जनजाति आयोग के चेयरमैन व इस यात्रा को लेकर जिला संयोजक बनाए गए प्रोफेसर रविंद्र बलियाला के नेतृत्व में रतिया क्षेत्र से भारी संख्या में श्रद्धालु आज रोड़ी के लिए रवाना हुए। मीडिया से बातचीत करते हुए प्रोफेसर रविंद्र बलियाला ने बताया कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350 में शहीदी दिवस को लेकर हरियाणा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व प्रदेश सरकार द्वारा एक संदेश यात्रा प्रदेश में निकाली जा रही है तथा यह यात्रा आज रोड़ी से प्रारंभ होकर प्रदेश भर में से होते हुए 24 नवंबर को कुरुक्षेत्र में पहुंचेगी जहां इस यात्रा का समापन भव्य ढंग से होगा। प्रोफेसर रविंद्र बालियान ने बताया कि यह यात्रा 17 नवंबर को फतेहाबाद पहुंचेगी और 18 नवंबर को इस यात्रा का रतिया के अंगीठा साहिब गुरुद्वारा में रात्रि विश्राम होगा।

करंट लगने से बिजली कर्मी की मौत

टोहाना। रोड जाम करते परिजन तथा प्रदर्शनकारियों से बातचीत करते पुलिस अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

- परिजनों ने लापरवाही का आरोप लगाते हुए किया रोड जाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| टोहाना

उपमंडल के रसूलपुर गांव में बिजली का कार्य करते समय करंट लगने से एक कर्मचारी की मौत होने का समाचार है। मृतक युवक हरियाणा कौशल रोजगार निगम के तहत कार्यरत था। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए टोहाना के नागरिक अस्पताल में भिजवा दिया है। घटना की सूचना मिलते ही परिजन अस्पताल पहुंचे और हंगामा शुरू कर दिया। उन्होंने बिजली निगम पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। मृतक की पहचान गांव हिंदालवाला निवासी 51 वर्षीय बसंत कुमार के रूप में हुई है। उनके परिवार में एक बेटा और एक बेटी हैं। अस्पताल में मौजूद मृतक कर्मचारी बसंत कुमार के लड़के मोहित ने बताया कि मार्च महीने में भी उनके पिता बिजली का कार्य करते समय गिर गए थे, जिसके चलते उनके पैर में रॉड डालकर ऑपरेशन किया गया था। लंबी छुट्टी के बाद उन्होंने शुक्रवार को ही ड्यूटी ज्वाइन की थी और शनिवार को यह हादसा हो गया।

परमिट लेने के बाद लाइन पर चढ़ाया, तो करंट कैसे लगा

मोहित ने बताया कि बिजली निगम द्वारा लाइन का परमिट लेने के बाद उनके पिता को लाइन पर चढ़ाया गया था। इसके बावजूद लाइन में करंट कैसे आया, यह बड़ा सवाल है। उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह से विभाग की लापरवाही का मामला है। साथ ही उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि जब उनके पिता के पैर में रॉड थी, तो उन्हें लाइन पर क्यों चढ़ाया गया। घटना की सूचना मिलते ही डीएसपी उमेद सिंह मौके पर पहुंचे और परिजनों से बातचीत की। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने परिजनों को मामले की निष्पक्ष जांच का आश्वासन दिया है वहीं परिजनों ने चेतावनी दी है कि जब तक दोषियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती, वे धरना जारी रखेंगे।

पार्षद नगरपरिषद के गेट के बाहर तंबू गाढ़कर देंगे धरना, राजनेताओं को बुलावा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

नगरपरिषद अधिकारियों की मनमानी और विकास कार्य ठप्प होने से परेशान नगर पार्षदों ने अब आंदोलन को तेज करने का निर्णय लिया है। नगरपरिषद के अंदर धरना दे रहे पार्षदों ने ऐलान किया है कि सोमवार से वे नगर परिषद की चारदीवारी के भीतर नहीं, बल्कि मुख्य गेट पर धरना देंगे। आंदोलन को और व्यापक बनाने के लिए पार्षदों ने समाजसेवी संस्थाओं से भी सहयोग की अपील की है। मिली जानकारी के अनुसार, पार्षद लंबे समय से नगर परिषद के कार्यों में पारदर्शिता और विकास कार्यों की मांग को लेकर धरने पर बैठे हुए हैं, लेकिन प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम न उठाए जाने से उनमें रोष बढ़ता जा रहा है। अब पार्षदों ने निर्णय लिया है कि यदि उनकी मांगें जल्द नहीं मानी गईं तो आंदोलन को और उग्र रूप दिया जाएगा। पार्षदों ने कहा कि वे जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं और नगर परिषद अधिकारियों की मनमानी अब और बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

फतेहाबाद। नगरपरिषद के अंदर धरना देते पार्षद। फोटो : हरिभूमि

ऑनलाइन फ्रॉड करने पर नूंह से दो युवक गिरफ्तार

- पुलिस ने आरोपियों से पुछताछ कर न्यायालय के किया पेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

ऑनलाइन ठगी के एक मामले में शहर फतेहाबाद पुलिस ने नूंह से दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए युवकों की पहचान मोंटी पुत्र विजय, निवासी खेरी कलां, फरीदाबाद, हाल वार्ड नं. 10, पुन्हाना तथा संदीप पुत्र महेंद्र निवासी शाहबाद डेयरी, उत्तर पश्चिम दिल्ली, हाल वार्ड नं. 09, पुन्हाना के रूप में हुई है। थाना शहर रतिया प्रभारी उपनिरीक्षक रणजीत सिंह ने बताया कि शिकायतकर्ता सिकंदर सिंह पुत्र बुग्गा सिंह, निवासी कुसला, जिला मानसा (पंजाब), हाल वार्ड नं. 1, रतिया ने 6 अक्टूबर को शिकायत दर्ज करवाई। उन्होंने बताया कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने खुद को उनके बेटे प्रदीप कुमार का मास्टर बताते हुए 25 हजार गलती से उनके खाते में आने की झूठी कहानी सुनाई और विश्वास में लेकर 5 हजार रुपये गूगल पे के माध्यम से अपने खाते में ट्रांसफर करा लिए। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने गहन जांच और साइबर सेल की तकनीकी मदद से आरोपियों की पहचान की और उन्हें नूंह से गिरफ्तार किया। इस संबंध में पुलिस ने 11 अक्टूबर को धारा 318(4) भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों से पूछताछ की और उन्हें न्यायालय में पेश किया। पुलिस मामले की आगे की जांच कर रही है ताकि इस साइबर ठगी नेटवर्क से जुड़े अन्य व्यक्तियों की संलिप्तता का पता लगाया जा सके।

रतिया। ऑनलाइन फ्रॉड मामले में गिरफ्तार दोनों युवक।

अवैध भट्ठियों को लेकर एसडीएम ने लिया संज्ञान

- शिकायतकर्ता व आरोपी के अलावा बीडीपीओ को किया तलब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

सिरसा के एसडीएम ने गांव रंगड़ीखेड़ा वीटा मिल्क प्लांट के साथ कच्चे रास्ते में लकड़ी से कोयला बनाने की अवैध भ_ियों के संचालन की शिकायत पर संज्ञान लेते हुए शिकायतकत्रा, आरोपी व बीडीपीओ सिरसा को 20 नवंबर को सुबह साढ़े 11 बजे अपने कार्यालय में तलब किया है। एसडीएम ने बीडीपीओ सिरसा को शिकायत के संदर्भ में मौके का निरीक्षण करने, भ_ियों के संचालन के लिए अनुमति पत्र, भ_ियों की मौजूदा स्थिति की रिपोर्ट भी प्रस्तुत करने के लिए कहा है। दरअसल, गांव रंगड़ीखेड़ा के सामाजिक कार्यकत्रा पवन कुमार पुत्र कश्मीरी लाल की ओर से मुख्य सचिव सहित आला अधिकारियों को शिकायत भेजी गई थी। जिसमें बताया गया कि सीडीएलयू में लैब अटेंडेंट के रूप में कार्यरत सुखविंद्र सिंह पुत्र दिलबाग सिंह द्वारा रंगड़ीखेड़ा के कच्चे रास्ते पर लकड़ी से कोयला बनाने वाली कई भ_ियां लगाई हुई है। जिसके कारण प्रदूषण फैलाकर ग्रामीणों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया जा रहा है। भ_ियों के संचालन के लिए किसी प्रकार की कोई अनुमति भी नहीं ली गई है। इसलिए आरोपी के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाए। शिकायत में बताया कि उसने 21 जुलाई 2025 और एक अगस्त 2025 को शिकायत भेजी थी। मामले में क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण विभाग ने अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। आरोपी द्वारा शिकायत को उसके बीच आपसी लेनदेन का बताकर एसडीएम को गुमराह किया गया। जबकि शिकायत का इससे कोई लेना देना नहीं है। उसके द्वारा जब पहली बार शिकायत की गई थी, तब मौके पर कई भट्ठियां चल रही थी। जिसकी उसके पास आज भी वीडियो फुटेज उपलब्ध है।

श्रीमद्भागवत गीता पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

समर्पण भाव से किया कर्म ऊर्जा प्रदान करता : शीशपाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रानियां

रानियां के ब्रह्माकुमारी आश्रम में तीन दिवसीय श्रीमद्भागवत गीता का सार, खुशहाल जीवन का आधार विषय पर धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन शुरू हुआ। इस मौके पर भाजपा नेता शीशपाल कंबोज ने कहा कि गीता का एक ही सार है भयमुक्त कर्म करते रहो और फल की चिंता न करो। उन्होंने कहा कि निष्काम और समर्पण भाव से किया गया कर्म ऊर्जा प्रदान करता है। जीवन यापन के दौरान जाने-अनजाने किसी का अहित न हो। उन्होंने कहा कि गीता केवल शास्त्र नहीं प्रयोगशाला है, हर व्यक्ति व्यक्ति को गीता की शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए। ब्रह्माकुमारी कमलेश दीदी ने बताया कि कर्नाटक से राजयोगिनी बाल ब्रह्मचारिणी वीणा दीदी नें लाइव होकर उपस्थित श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत गीता का सार समझाया। ब्रह्माकुमारी वीणा दीदी ने गीता पर पीएचडी कर रखी और 500 से ज्यादा गीता पर प्रोग्राम कर चुकी है। उन्होंने समझाते हुए बताया कि सत्य गीता ज्ञान से हम जीवन को श्रेष्ठ बना सकतें है, यही सत्य गीता ज्ञान है जिससे हम बुराईयों से मुक्त होने की शक्ति प्राप्त कर सकते है। गीता ज्ञान केवल हिंदू धर्म का शास्त्र नहीं है, ये सभी धर्मों के लिए आवश्यक है। इससे मनुष्य को योग्य और महान बनने की प्रेरणा प्राप्त होती है। कर्म करना हमारा अधिकार है, फल की चिंता करना हमारा अधिकार नहीं है। उन्होंने भगवान द्वारा बताए गए आत्म संयम और आत्म ज्ञान को भी विस्तार किया और कहा कि यह दोनों धारणाएं हमें अनुभवी और आत्मविश्वासी बनाती है।

सिरसा। कार्यक्रम में मौजूद मुख्य अतिथि व अन्य। फोटो : हरिभूमि

खुद को ईश्वरीय कार्य में समर्पित करना ही सच्ची सेवा

उपमंडलाधीश पारस भगोरिया ने कहा कि समाज सुधार तथा मानसिक वृत्तियों के शुद्धिकरण के प्रति अपनी जिम्मेवारी को समझते हुए खुद को ईश्वरीय कार्य में समर्पित करना ही सच्ची सेवा है। उन्होंने कहा कि सभी धार्मिक संस्थाए एकजुट होकर एक ही दिशा में कार्य करेंगी तो जल्द ही विश्व में स्वर्णिम प्रभात का सूर्योदय होगा। इस अवसर पर ऐलनाबाद अग्रवाल सभा के प्रधान सुभाष गोयल, सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन पिंचू कालड़ा, एडवोकेट प्रकाशवीर जलंधरा, अविनाश कंबोज, चेयरमैन ललित पोपली, पूर्व सरपंच राजेंद्र कम्बोज, देशबंधू मेहता, डा. राधेश्यामं खुराना, निर्मल बसरा सहित शहर के अनेक प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे।

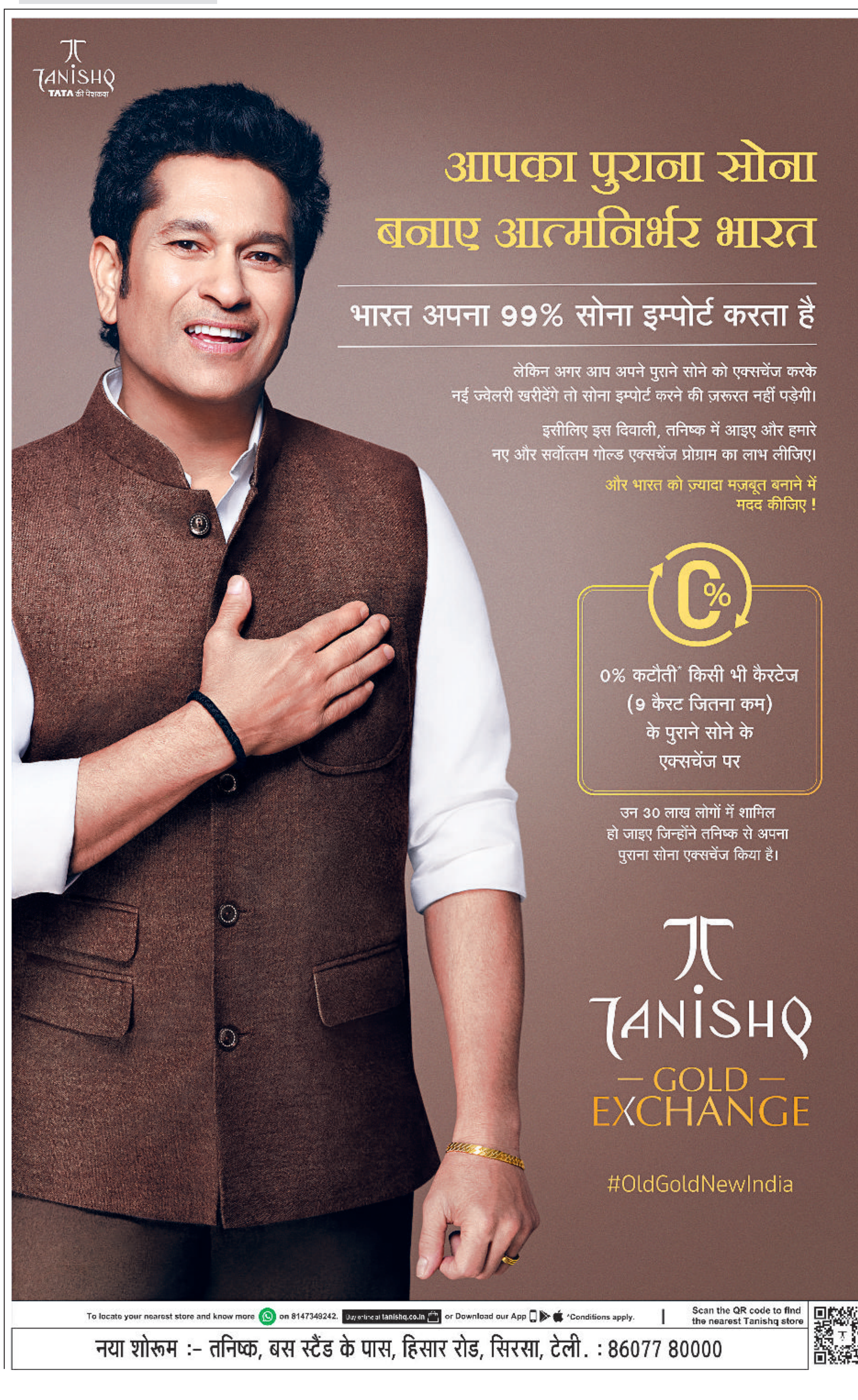

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, आपको ग्रोथ ऑप्शन और डिविडेंड ऑप्शन में से एक का चयन करना होता है। ये दोनों ऑप्शन आपके निवेश के उद्देश्य और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं।

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ या डिविडेंड ऑप्शन में से बेहतर क्या और क्यों?

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के लिए क्या रहेगा फायदे का सौदा ग्रोथ और डिविडेंड किसमें मिलेगा ज्यादा फायदा, फैसला गलत हो जाए तो कैसे स्विच करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय कई बार निवेशकों को यह कनफ्यूजन हो सकता है कि किसी स्कीम का ग्रोथ ऑप्शन चुनें या डिविडेंड ऑप्शन बेहतर रहेगा? सही ऑप्शन का चुनाव आपके रिटर्न को बढ़ा सकता है, जबकि गलत सेलेक्शन से आपका मुनाफा घट सकता है। यही वजह है कि समझदारी से लिया गया फैसला आपके इनवेस्टमेंट की ग्रोथ को कई गुना बढ़ा सकता है। आमतौर पर ग्रोथ विकल्प बेहतर होता है, क्योंकि यह लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज के कारण अधिक धन बनाता है, जबकि डिविडेंड विकल्प उन निवेशकों के लिए बेहतर है जो नियमित आय चाहते हैं। ग्रोथ में, फंड लाभ को फिर से निवेश करता है, जिससे निवेश का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, जबकि डिविडेंड में, फंड आय वितरित करता है, जिससे चक्रवृद्धि ब्याज का प्रभाव कम हो जाता है। आइए इस रिर्ट में जानते हैं दोनों ऑप्शंस का फर्क, फायदे और स्विच करने के नियम।

ग्रोथ ऑप्शन के फायदे

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ ऑप्शन में आपके निवेश पर जो भी मुनाफा बनता है, वो आपको कैश में नहीं दिया जाता है, बल्कि, वह पैसा दोबारा उसी म्यूचुअल फंड फिर से इनवेस्ट कर दिया जाता है। इसका फायदा यह होता है कि आपके मुनाफे पर भी मुनाफा जुड़ने लगता है, जिससे कंपाउंडिंग का बेनिफिट मिलता है। समय के साथ कंपाउंडिंग की यह ताकत आपकी पूंजी को तेजी से बढ़ाने में मदद करती है. यही वजह है कि ग्रोथ ऑप्शन में फंड की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी ज्यादा तेजी से बढ़ती है।

डिविडेंड ऑप्शन क्या है

पहले जिसे डिविडेंड ऑप्शन कहा जाता था, उसे अब 'इनकम डिस्ट्रीब्यूशन कम कैपिटल विदड्रॉल' ऑप्शन यानी आईडीसीडब्ल्यू का नाम दे दिया गया है। इसमें फंड से मिलने वाला मुनाफा समय-समय पर निवेशकों में बांट दिया जाता है। हालांकि पेआउट की यह फ्रीक्वेंसी फिक्स नहीं होती, लेकिन जब भी ऐसा भुगतान किया जाता है, फंड की एनएवी घट जाती है। इसका मतलब है कि लंबे समय में आपकी पूंजी उतनी तेजी से नहीं बढ़ पाती जितनी ग्रोथ ऑप्शन में बढ़ सकती है। सेबी ने डिविडेंड ऑप्शन का नाम बदलकर आईडीसीडब्ल्यू इसलिए रखा, ताकि निवेशकों को यह समझ में आए कि इस पेआउट में कुछ हिस्सा आपकी अपनी पूंजी से निकलता है. यह कोई गारंटीड इनकम जैसा विकल्प नहीं हैं।

कौन सा विकल्प सही

ग्रोथ और डिविडेंड ऑप्शन में आपके लिए कौन सा विकल्प सही है, यह पूरी तरह आपके आर्थिक लक्ष्य और निवेश के मकसद से तय होता है। अगर आप रिटायर्ड हैं या किसी वजह से रेगुलर इनकम (आपके लिए जरूरी है, तो आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन आपके लिए बेहतर हो सकता है, लेकिन अगर आप लंबी अवधि के लिए पैसे लगा रहे हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा लगातार बढ़ता रहे, तो ग्रोथ ऑप्शन सही रहेगा। लंबे समय में देखा जाए तो ग्रोथ ऑप्शन आमतौर पर बेहतर रिटर्न देता है, क्योंकि इसमें कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। वहीं, आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन उन निवेशकों के लिए है जो समय-समय पर पैसा निकालना चाहते हैं और रेगुलर इनकम चाहते हैं।

गलत विकल्प चुन लिया हो तो क्या करें?

म्यूचुअल फंड में सही ऑप्शन चुनना उतना ही जरूरी है जितना सही फंड चुनना. दोनों की अपनी-अपनी खूबियां और सीमाएं हैं।

कई निवेशक शुरुआत में रेगुलर इनकम पाने के लिए या किसी कनफ्यूजन की वजह से आईडीसीडब्ल्यू चुन लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें महसूस होता है कि अगर उनका पूरा मुनाफा फंड में ही दोबारा निवेश होता, तो लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिल सकता था। ऐसा होने पर निवेशक अपने पैसों को ग्रोथ ऑप्शन में स्विच कर सकते हैं, लेकिन उससे पहले म्यूचुअल फंड पर लागू होने वाले टैक्स के नियमों और एग्जिट लोड के असर को समझना जरूरी है।

आईडीसीडब्ल्यू से ग्रोथ ऑप्शन में कैसे स्विच करें

अगर आप अपने म्यूचुअल फंड इनवेस्टमेंट को डिविडेंड या आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन से ग्रोथ ऑप्शन में स्विच करना चाहते हैं, तो इसके लिए एक फॉर्म भरना होता है। फंड स्विचिंग की यह प्रॉसेस आमतौर पर 24 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन याद रखें कि इस तरह का स्विच रिडेम्पशन और नई खरीदारी दोनों ही माना जाता है। इसका मतलब है कि आपको यूनिट होल्ड करने की अवधि के हिसाब से एग्जिट लोड और कैपिटल गेन्स टैक्स देना पड़ सकता है। इसलिए फैसला करने से पहले पूरी टैक्स देनदारी को जरूर समझ लें।

निवेश का उद्देश्य लंबी अवधि के लिए पूंजी की वृद्धि

डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है, बल्कि इसे फंड में पुनर्निवेश किया जाता है।
निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि होती है, जिससे आपका मूल निवेश बढ़ता है।
कर लाभ : ग्रोथ ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

डिविडेंड ऑप्शन
- **निवेश का उद्देश्य :** नियमित आय प्राप्त करना।
- **डिविडेंड :** डिविडेंड का भुगतान किया जाता है, जिससे आपको नियमित आय मिलती है।
- **निवेश की वृद्धि :** निवेश की वृद्धि कम होती है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।
- **कर लाभ :** डिविडेंड ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ नहीं मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

कब ग्रोथ ऑप्शन चुनें
- **लंबी अवधि के निवेशक :** यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं और पूंजी की वृद्धि करना चाहते हैं।
- **नियमित आय की आवश्यकता नहीं :** यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता नहीं है और आप अपने निवेश को बढ़ाना चाहते हैं।

कब डिविडेंड ऑप्शन चुनें
- नियमित आय की आवश्यकता : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता है और आप अपने निवेश से आय प्राप्त करना चाहते हैं।
- अल्पकालिक निवेशक : यदि आप अल्पकालिक निवेश करना चाहते हैं और नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

गलत फंड चुनने से बचना चाहते हैं तो निवेश से पहले जान लें ये टिप्स

- बाजार में मौजूद 250 से ज्यादा ईटीएफ में से अपने लिए सही फंड चुनना आसान नहीं
- लक्ष्य और कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो सही फंड में निवेश करना आसान हो जाएगा

अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका रिटर्न पर बुरा असर पड़ेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। वजह साफ है। ईटीएफ बेहद कम खर्च में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने का मौका देते हैं। इसके साथ ही उन्हें एक्सचेंज पर जाकर स्टॉक्स की तरह आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है, लेकिन बाजार में 250 से ज्यादा ईटीएफ मौजूद हैं। ऐसे में अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती हो सकता है। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका आपके रिटर्न पर बुरा असर पड़ सकता है। अगर आप अपने निवेश के लिए सही ईटीएफ चुनना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ ऐसे ही टिप्स जो आपको सही फंड चुनने में मदद करेंगे।

आपका ईटीएफ किस इंडेक्स को ट्रैक करता है

हर ईटीएफ किसी न किसी इंडेक्स को ट्रैक करता है। यानी आप इनडायरेक्ट तौर पर उस इंडेक्स में शामिल कंपनियों या एसेट्स में निवेश कर रहे होते हैं। मसलन, अगर आपका ईटीएफ निफटी 50 या सेसेंक्स को फॉलो करता है, तो आप उनके जरिये देश की टॉप कंपनियों की हिस्सेदारी खरीद रहे होते हैं। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आपका चुना हुआ ईटीएफ किस इंडेक्स से जुड़ा है और क्या वह आपके निवेश के उद्देश्य से मेल खाता है। सही इंडेक्स का चुनाव लंबे समय में बेहतर रिटर्न की दिशा तय करता है।

ट्रैकिंग एरर पर रखिए खास नजर

हर ईटीएफ कोशिश करता है कि वह अपने बेंचमार्क इंडेक्स को हूबहू फॉलो करे, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं होता. इस छोटे फर्क को ही ट्रैकिंग एरर कहा जाता है। अगर यह एरर कम है, तो ईटीएफ अपने इंडेक्स के रिटर्न से काफी हद तक मेल खाता है। वहीं, अगर ट्रैकिंग एरर ज्यादा है, तो आपके रिटर्न उम्मीद से कम हो सकते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे ईटीएफ को चुनना बेहतर रहता है, जिसका ट्रैकिंग एरर कम से कम हो।

लिक्विडिटी यानी खरीदना-बेचना कितना आसान

निवेश का मकसद सिर्फ रिटर्न पाना नहीं होता, बल्कि आपके पास जरूरत पड़ने पर पैसा निकालने की बेहतर सुविधा होनी भी जरूरी है। इसलिए ईटीएफ की लिक्विडिटी बेहद अहम होती है। अगर किसी ईटीएफ में रोजाना अच्छा कारोबार होता है, यानी खरीदने और बेचने वालों की संख्या काफी है, तो उसे कभी भी बेचना आसान रहेगा, लेकिन अगर फंड का ट्रेडिंग वॉल्यूम कम है, तो आपको जरूरत पड़ने पर कम समय में अपनी यूनिट्स बेचने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। हमेशा ऐसे ईटीएफ का चुनाव करें जिसे जरूरत पड़ने पर आसानी से खरीदा या बेचा जा सके।

ईटीएफ के प्राइस और एनएवी में फर्क को समझें

ईटीएफ की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) यह बताती है कि उसमें शामिल एसेट्स का मौजूदा मूल्य कितना है। आम तौर पर ईटीएफ का मार्केट प्राइस उसके एनएवी के आसपास होना चाहिए, लेकिन कई बार मार्केट प्राइस इससे काफी ऊपर या नीचे भी ट्रेड करता है। अगर ईटीएफ का प्राइस उसकी एनएवी से काफी ज्यादा है, तो आप जरूरत से ज्यादा पैसे चुका रहे हैं। इसलिए निवेश से पहले हमेशा देखें कि ईटीएफ की कीमत उसकी एनएवी के करीब हो, ताकि आपका पैसा सही वैल्यू पर निवेश किया जा सके।

एक्सपेंस रेशियो पर ध्यान देना न भूलें

हर ईटीएफ को चलाने के लिए मैनेजमेंट कॉस्ट लगती है, जिसे एक्सपेंस रेशियो कहा जाता है। इसका आंकड़ा पहली नजर में भले ही बेहद छोटा लगे, लेकिन लंबे समय में यह आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ईटीएफ का एक्सपेंस रेशियो 0.05% है और दूसरे का 0.10%, तो शुरुआत में फर्क छोटा दिखेगा, पर साल दर साल यही फर्क आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। इसलिए बाकी बातें समान रहने पर हमेशा उसी ईटीएफ का चुनाव करें, जिसका एक्सपेंस रेशियो कम हो। सही ईटीएफ का चुनाव करना किसी भी निवेशक के लिए बड़ा फैसला होता है, क्योंकि इसी से तय होता है कि आगे चलकर आपका निवेश कितना स्टेबल और फायदेमंद रहेगा।

सही फैसला लें

अगर आप ऊपर बताई गई बातों-बेंचमार्क इंडेक्स, ट्रैकिंग एरर, लिक्विडिटी, प्राइस-एनएवी डिफरेंस और एक्सपेंस रेशियो - को ध्यान में रखकर फंड चुनेंगे, तो सही फैसला लेना आसान होगा। याद रखें, सारे ईटीएफ एक जैसे नहीं होते। इसलिए जल्दबाजी में नहीं, बल्कि समझदारी के साथ सही ईटीएफ चुनें।

क्या है ईटीएफ

ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश उत्पाद है जो शेयर बाजार में ट्रेड किया जाता है। यह एक म्यूचुअल फंड की तरह होता है, लेकिन इसे शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है जैसे कि शेयर।

ईटीएफ की विशेषताएं

1. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
2. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर, बॉन्ड, या अन्य सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
3. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर म्यूचुअल फंड की तुलना में कम होती है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के प्रकार

1. **इक्विटी ईटीएफ :** ये ईटीएफ शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
2. **बॉन्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ बॉन्ड में निवेश करते हैं।
3. **सेक्टोरल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।
4. **इंटरनेशनल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विदेशी शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
5. **गोल्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ सोने में निवेश करते हैं।

ईटीएफ के लाभ

1. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर या सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
2. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर कम होती है।
3. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के जोखिम

1. **मार्केट जोखिम :** ईटीएफ के मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है।
2. **लिक्विडिटी जोखिम :** ईटीएफ की लिक्विडिटी कम हो सकती है।
3. **ट्रैकिंग एरर :** ईटीएफ का प्रदर्शन उसके अंडरलाइंग इंडेक्स के प्रदर्शन से भिन्न हो सकता है।

आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी तो यह सही कदम

कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी लोन इंश्योरेंस बेचते हैं

एजेंट की बातों से न हों कनफ्यूज, लोन का इंश्योरेंस का कदम सही या गलत ऐसे समझें

सलाह
बिजनेस डेस्क

जब आप कोई लोन लेते हैं, तो बैंक या एजेंट अक्सर लोन इंश्योरेंस लेने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या वाकई इसकी जरूरत होती है? हर स्थिति में नहीं। लोन इंश्योरेंस समझदारी का कदम तब है जब आपकी आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी है, लेकिन कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी इसे बेचते हैं। इसलिए आप एजेंट की बातों के कनफ्यूज न हों और अपने लिए सही विकल्प चुनें। तभी आप लोन लेकर खुद को सुरक्षित कर सकते हैं, वरना कई यह आपके गले की फांस भी बन सकता है। अक्सर जब आप बैंक या एनबीएफसी से पर्सनल लोन, होम लोन या कार लोन लेने जाते हैं, तो एजेंट आपको एक और प्रोडक्ट बेचने की कोशिश करता है- लोन इंश्योरेंस वह कहता है कि अगर किसी वजह से आप लोन नहीं चुका पाए तो यह इंश्योरेंस आपकी ईएमआई भर देगा या आपके परिवार पर बोझ नहीं डालेगा। पहली नजर में यह बात सही लगती है, लेकिन असल में हर बार लोन इंश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होता है। कई बार यह सिर्फ बैंक या एजेंट का कमिशन कमाने का तरीका होता है। इसलिए बिना समझे इंश्योरेंस खरीदना नुकसानदायक हो सकता है।

लोन इंश्योरेंस होता क्या है?

लोन इंश्योरेंस एक ऐसी पॉलिसी होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि अगर किसी वजह से लोन लेने वाला व्यक्ति ईएमआई नहीं भर पाता, तो इंश्योरेंस कंपनी बाकी ईएमआई का भुगतान करेगी। इसका मकसद बैंक या लेंडर को डिफॉल्ट रिस्क से बचाना होता है, लेकिन ध्यान दीजिए कि यह सुरक्षा आपके परिवार के लिए नहीं, बल्कि बैंक के लिए होती है। यानी बैंक को तो उसका पैसा मिल जाता है, पर आपके परिवार को सीधा फायदा नहीं होता।

कब जरूरी है लोन इंश्योरेंस?

हर लोन के साथ इंश्योरेंस जरूरी नहीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों में यह समझदारी भरा कदम हो सकता है।

1. **होम लोन या बड़ी रकम वाला लोन :** अगर आपने लंबी अवधि के लिए होम लोन या बिजनेस लोन लिया है, तो इंश्योरेंस आपको और परिवार को राहत दे सकता है।
2. **अगर आप सोल ब्रेडविनर हैं :** अगर परिवार में कमाने वाले आप ही हैं और किसी कारणवश आपकी मृत्यु हो जाए या नौकरी छूट जाए, तो यह पॉलिसी बाकी लोन चुका सकती है।
3. **अगर आपका प्रोफेशन रिस्की है :** जो लोग खतरनाक कामों में हैं या फिर मेडिकल इंडस्ट्री में हैं, तो उनके लिए यह इंश्योरेंस जरूरी है।

कब नहीं लेना चाहिए लोन इंश्योरेंस?

कई बार बैंक या एजेंट आपको डर दिखाकर यह पॉलिसी थमा देते हैं, लेकिन हर केस में इसकी जरूरत नहीं होती।

1. **अगर आपके पास लाइफ इंश्योरेंस पहले से है :** अगर आपके पास पर्याप्त टर्म इंश्योरेंस है, तो अलग से लोन इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं है। आपका टर्म प्लान परिवार को पूरी सुरक्षा देता है।
2. **अगर लोन छोटी अवधि का है :** जैसे पर्सनल लोन 1-2 साल के लिए हो या कार लोन बहुत छोटी रकम का हो, तो उस पर इंश्योरेंस का प्रीमियम देना बेकार है।
3. **अगर ईएमआई आपकी इनकम का छोटा हिस्सा है :** जब ईएमआई आपकी इनकम का सिर्फ 10-15% हो, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस का खर्च आपकी जेब पर बोझ बन सकता है।

एजेंट से कनफ्यूज ना हों

एजेंट या बैंक अधिकारी कई बार कहते हैं कि बिना इंश्योरेंस लोन अप्रूव नहीं होगा, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। आरबीआई और इरडा दोनों ने साफ किया है कि लोन इंश्योरेंस कभी भी अनिवार्य नहीं होता। अक्सर ग्राहक कन्फ्यूज होकर पॉलिसी ले लेता है, जो बाद में बेकार साबित होती है।

कितना होता है लोन इंश्योरेंस का प्रीमियम?

अगर आप 10 लाख रुपये का लोन करीब 5 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपको 10-12 हजार रुपये का इंश्योरेंस प्रीमियम लग सकता है। यह प्रीमियम कम-ज्यादा हो सकता है और आप इस पर बारगेनिंग भी कर सकते हैं। यह प्रीमियम या तो आपसे एकमुश्त लिया जाता है या लोन राशि में जोड़ दिया जाता है। मतलब, कुछ मामलों में आप उसके ऊपर भी ब्याज चुकाते हैं।

क्या लोन इंश्योरेंस टैक्स बेनिफिट देता है?

कुछ लोन इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स बेनिफिट मिल सकता है, लेकिन यह इंश्योरेंस के प्रकार पर निर्भर करता है। अगर पॉलिसी लाइफ इंश्योरेंस कैटेगरी में आती है, तो सेक्शन 80सी के तहत छूट मिल सकती है, लेकिन अगर यह केवल क्रेडिट प्रोटेक्शन पॉलिसी है, तो टैक्स बेनिफिट नहीं मिलता।

सही निर्णय कैसे लें?

1. **तुलना करें :** विभिन्न इंश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम और कवरेज की तुलना करें।
2. **एजेंट की बातों पर आंख मूंदकर भरोसा न करें :** हर सलाह के पीछे कमीशन छिपा हो सकता है।
3. **अपनी जरूरत देखें :** अगर आपका लोन छोटा है या पहले से टर्म इंश्योरेंस है, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस की जरूरत नहीं।
4. **पॉलिसी डॉक्युमेंट पढ़ें :** साइन करने से पहले उसके सभी दस्तावेजों को जरूर समझें। यानी किन परिस्थितियों में क्लेम नहीं मिलेगा।

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट है, लेकिन हर किसी के लिए जरूरी नहीं। अगर आपके ऊपर बड़ा लोन है, परिवार आप पर निर्भर है या आपकी हेल्थ रिस्की है, तो इसे लेना समझदारी है, लेकिन अगर आपका लोन छोटा है, ईएमआई कंट्रोल में है और टर्म इंश्योरेंस पहले से है, तो एजेंट की बातों में आकर इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं। हमेशा याद रखें कि लोन इंश्योरेंस बैंक के लिए सुरक्षा है, आपके लिए नहीं।

खबर संक्षेप

ऑनलाइन लहंगा ऑर्डर के बहाने की ठगी, आरोपी काबू

फतेहाबाद। ऑनलाइन लहंगा ऑर्डर के बहाने हजारों की ठगी करने के मामले में टोहाना पुलिस ने राजस्थान के एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक की पहचान निखिल मीना पुत्र ओमप्रकाश मीना, निवासी फीलसान बिहारीपुरा, थाना बसी, जिला जयपुर, राजस्थान के रूप में हुई है। आरोपी के पास से 4100 रुपये नगद बरामद की गई। थाना सदर टोहाना प्रभारी उपनिरीक्षक शादी राम ने बताया कि शिकायतकर्ता प्रवीण कुमार, निवासी गांव गाजुवाला, थाना सदर टोहाना ने बताया कि उसकी पत्नी की इंस्टाग्राम आईडी से शीतल डिजाइनर्स नामक एक अकाउंट पर लहंगा ऑर्डर को लेकर बातचीत हुई। आरोपी ने व्हाट्सएप के माध्यम से क्यूआर कोड भेजकर एडवांस भुगतान के नाम पर 15500 रुपये ठग लिए।

नौकरी के नाम पर खाता खुलवाकर की ठगी

फतेहाबाद। नौकरी के नाम पर बैंक खाता खुलवाकर ठगी करने के मामले में थाना साइबर क्राइम फतेहाबाद पुलिस ने एक और युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान हिमांशु पुत्र सुभाष, निवासी निकट रामलीला ग्राउंड, भुना के रूप में हुई है। इससे पहले भी इसी मामले में दो अन्य आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। थाना साइबर क्राइम प्रभारी निरीक्षक राहुल देव ने बताया कि शिकायतकर्ता भगवत दयाल उर्फ शिवम पुत्र सतपाल, निवासी ठाकर बस्ती, फतेहाबाद ने यह मामला दर्ज कराया।

फायरिंग मामले में मुख्य आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। गांव बीराबदी में खेतों में जमीनी विवाद के चलते फायरिंग करने के मामले में सीआईए रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान संजीव कुमार पुत्र बूटा सिंह, निवासी खोखर ढाणी, रतिया के रूप में हुई है। इससे पहले इस मामले में 9 अन्य आरोपी पहले ही पुलिस गिरफ्त में आ चुके हैं। सीआईए रतिया प्रभारी सहायक उपनिरीक्षक रिछपाल सिंह ने बताया कि यह मामला 16 मार्च का है, जब गांव बीराबदी के खेतों में जमीन विवाद के कारण हमला किया गया था।

भोड़ियाखेड़ा में श्री श्याम संकीर्तन आज रात

फतेहाबाद। श्याम बाबा के प्रकट उत्सव के उपलक्ष्य में श्री श्याम संकीर्तन 9 नवम्बर रविवार को गांव भोडियाखेड़ा में पंजाबी चौक के पास स्थित आनंदपुर कुटिया में धूमधाम से आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम को लेकर सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं और श्री श्याम भक्तों में संकीर्तन को लेकर काफी उत्साह है। यह जानकारी देते हुए महिला मंडल भोडिया की सदस्यों ने बताया कि यह कार्यक्रम रात्रि 8 बजे से प्रभुइच्छा तक आयोजित किया जाएगा। श्री श्याम संकीर्तन में टी सीरिज कलाकार भारत टुटेजा, वंश मुटरेजा, रजनी देवी सहित अनेक कलाकार बाबा श्याम का गुणगान करेंगे। उसके बाद बाबा श्याम का लंगर प्रसाद वितरित किया जाएगा। कार्यक्रम में श्याम बाबा का दरबार देखने योग्य होगा।

राजकीय कालेज में वार्षिक खेल प्रतियोगिता आयोजित

उकलाना। राजकीय महाविद्यालय में पांचवीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मुगलपुरा की सरपंच राजपति एवं उनके पति मंगल राम उपस्थित रहे, जबकि समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेश महत्ता, सेवानिवृत्त प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय भोडियाखेड़ा ने की। लड़कों में विक्रम कुमार (बीए तृतीय वर्ष) और लड़कियों में शिवांगी (बीए तृतीय वर्ष) ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए बेस्ट एथलीट ट्रॉफी अपने नाम की। प्रतियोगिता प्राचार्या डॉ. रेखा सलूजा के कुशल मार्गदर्शन एवं खेल समिति प्रभारी डॉ. तनुजा के नेतृत्व में संपन्न हुई।

हरियाणा ओलंपिक संघ की फुटबॉल स्टेट चैम्पियनशिप

भूना के फुटबॉलर करनाल में छाए झज्जर को हराकर बने स्टेट चैम्पियन

- पेनल्टी शूटआउट में 4-2 से हराया, भूना व फतेहाबाद का नाम किया रोशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भूना

भूना। स्टेट चैंपियनशिप में जीत के बाद खुशी का इजहार करते फतेहाबाद टीम के खिलाड़ी।

भूना के फुटबॉल खिलाडियों ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए करनाल में आयोजित हरियाणा ओलंपिक संघ की फुटबॉल स्टेट चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल जीत लिया। रोमांचक फाइनल मुकाबले में भूना के खिलाडियों ने झज्जर की टीम को पेनल्टी शूटआउट में 4-2 से हराकर विजेता ट्रॉफी अपने नाम की। जीत के बाद पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। जिला खेल अधिकारी विष्णु दास, फुटबॉल नर्सरी भूना के कोच जसमेर सिंह श्योराण, सनियाना नर्सरी कोच महेंद्र मेहरा, नगर पालिका चेयरपर्सन अर्पणा पसरीजा, वाइस चेयरमैन नरेंद्र बागड़ी और जिला फुटबॉल संघ के पदाधिकारियों ने टीम को बधाई दी। कोच जसमेर सिंह श्योराण ने बताया कि हरियाणा ओलंपिक स्टेट चैंपियनशिप में फतेहाबाद की टीम का पहला मुकाबला कैथल के साथ हुआ, जिसमें टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 7-1 से जीत दर्ज की। दूसरा मैच लीग के अनुसार सिरसा के साथ होना था, लेकिन सिरसा की टीम के न पहुंचने पर फतेहाबाद ने कैथल से दोबारा मुकाबला खेला और 2-0 से जीत हासिल की। तीसरे मैच में फतेहाबाद का सामना करनाल की टीम से हुआ। दोनों ही टीमों ने जोरदार खेल दिखाया और निर्धारित समय तक मुकाबला बराबरी पर रहा। इसके बाद हुए पेनल्टी शूटआउट में भूना के फुटबॉलरों ने 9-8 से जीत दर्ज कर सेमीफाइनल में जगह बनाई। फाइनल मुकाबला फतेहाबाद (भूना) और झज्जर के बीच हुआ, जो बेहद रोमांचक रहा। दोनों टीमों ने शानदार खेल दिखाया, लेकिन निर्धारित समय तक कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी। मुकाबला पेनल्टी शूटआउट तक पहुंचा, जिसमें भूना के खिलाड़ियों ने शानदार संयम दिखाते हुए झज्जर को 4-2 से हराया और स्टेट चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया।

जीत का श्रेय पूरी टीम को : कप्तान

टीम के कप्तान मनदीप सिंह वर्मा ने जीत का श्रेय पूरी टीम को देते हुए कहा कि खिलाड़ियों की आपसी तालमेल और अनुशासन के कारण ही यह उपलब्धि संभव हो सकी। उन्होंने कहा कि मैच के हर पल में टीम ने एक-दूसरे का मनोबल बढ़ाया और विपक्षी टीम पर लगातार दबाव बनाए रखा। टीम की इस जीत पर जिला फुटबॉल संघ के प्रधान जयदीप बराला, उप प्रधान जोगिंदर पाल लीखा, मुकेश भूटानी, स्कूल प्रिंसिपल नरेश शर्मा, प्रो. जियालाल बंसल सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने बधाई दी और कहा कि भूना के फुटबॉलरों ने पूरे जिला फतेहाबाद और प्रदेश का नाम रोशन किया है।

सिरसा। सीएमके कालेज में सुखमणि साहब का पाठ करते पाठी।

श्री गुरु तेग बहादुर सीएमके कालेज में कार्यक्रम

सुखमणि साहब पाठ आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

- श्री गुरु तेग बहादुर जी के सर्वोच्च बलिदान की मानवता सदैव ऋणी रहेगी : रंजना ग्रोवर

सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय में श्री गुरु तेग बहादुर के 350 वे शहादत वर्ष को समर्पित कॉलेज के सेमिनार हॉल में श्री सुखमणि साहब का पाठ करवाया गया। गुरु तेग बहादुर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कालेज प्राचार्या डॉ. रंजना ग्रोवर ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के सर्वोच्च बलिदान की मानवता सदैव ऋणी रहेगी। धर्म, मातृभूमि और जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। इसीलिए उन्हें हिंद की चादर के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया। श्री गुरु तेग बहादुर ने हमें निडर होकर एक स्वतंत्र जीवन जीने की शिक्षा दी। मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा गुरू जी और उनके परिवार को भारी यातनाएं देने पर भी उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया, बल्कि उन्हें एक दिव्य शांति के साथ सहन किया। गुरू जी ने अपने जीवन का बलिदान दिया लेकिन सत्य और धार्मिकता के मार्ग को नहीं छोड़ा। श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत मनुष्य को कर्तव्य परायणता, स्वतंत्रता व देश के प्रति प्रतिबद्धता का पाठ पढ़ाती है। आज की युवा पीढ़ी को श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन, चरित्र और बलिदान से प्रेरणा पाकर मानवीय और नैतिक मूल्यों को जीवन में आगे बढने की जरूरत है। श्री सुखमणि साहब पाठ का भोग डालने के उपरांत ढाडी जत्थे की ओर से भजन कीर्तन भी किया गया।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर श्रीमती संगीता नंदा, बबीता मल्होत्रा, डॉक्टर आरती बंसल, डॉक्टर नछतर सिंह रंधावा डा दीपिका शर्मा, हरमीत सिंह सहित अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

विस्तार में 25 लाख की आएगी लागत

कुम्हार धर्मशाला में भवन विस्तार का रखा नींव पत्थर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

कुम्हार धर्मशाला में भवन विस्तार हेतु नींव रखकर कार्य का शुभारम्भ किया। कार्यकारिणी सचिव रामचंद्र नोखवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि भवन विस्तार की कुल लागत लगभग 25 लाख रुपये आएगी। इस अवसर पर जिला कुम्हार सभा सिरसा की आम सभा की बैठक भी हुई, जिसमें भवन निर्माण समिति/खरीद समिति का गठन किया गया, जिसमें प्रधान कुम्भा राम सहित सात सदस्य होंगे। इस अवसर पर मुख्य रूप से गुरदेव सिंह राही पूर्व चेयरमैन माटी कला बोर्ड, रामचंद्र लिम्बा प्रदेशाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग कल्याण महासभा हरियाणा, दलीप वर्मा पूर्व प्रधान, रामानंद निराणिया पूर्व प्रधान, जीत सिंह जलंधरा, चानन राम, हरदयाल बैरी, पृथ्वीराज मलेठिया, सतपाल सिंहमार, बृज मोहन गेदर, वीर सिंह घोड़ेला, विनोद रेवाडिया, रतनलाल गेदर, मदन वर्मा, गगनदीप जलंधरा सहित सभा के सदस्य मौजूद रहे।

सिरसा। कुम्हार धर्मशाला नींव पत्थर रखते प्रधान कुंभा राम।

फेसबुक विज्ञापन फ्रॉड मामले में साइबर पुलिस फतेहाबाद ने हिसार के युवक को पकड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

- ऑनलाइन रिव्यू देने के बदले भुगतान का दिया झांसा
- आरोपी से 5000 रुपये नकद बरामद किए

फेसबुक/इंस्टाग्राम एडवाटाइजमेंट फ्रॉड के एक मामले में थाना साइबर क्राइम फतेहाबाद पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान कपिल पुत्र कुलदीप सिंह निवासी बालसमंद, जिला हिसार के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 5 हजार नकद बरामद किए हैं। इससे पहले भी इसी मामले में एक अन्य आरोपी को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। थाना साइबर क्राइम प्रभारी निरीक्षक राहुल देव ने बताया कि यह मामला शिकायतकर्ता ज्योति पुत्री मनोहर लाल ग्रोवर, निवासी मॉडल टाउन, फतेहाबाद की शिकायत पर दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता ने बताया कि 31 जनवरी को उसके मोबाइल नंबर पर अज्ञात व्यक्ति ने ऑनलाइन रिव्यू देने के बदले भुगतान का झांसा देकर ठगी की। आरोपी ने कई यूपीआई आईडी के माध्यम से अलग-अलग ट्रांजेक्शन में 1 लाख 6 हजार 500 रुपये अपने खातों में डलवाए और बाद में ब्लॉक कर दिया। पीड़िता ने इसकी ऑनलाइन शिकायत 2 फरवरी को दर्ज करवाई थी। इसके आधार पर थाना साइबर क्राइम फतेहाबाद में जांच प्रारंभ की गई। जांच में तकनीकी साक्ष्य और बैंक ट्रांजेक्शन एनालिसिस से आरोपी कपिल पुत्र कुलदीप सिंह की संलिप्तता सामने आई, जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस द्वारा मामले में आगे की जांच जारी है ताकि इस ऑनलाइन ठगी नेटवर्क से जुड़े अन्य आरोपियों की पहचान कर कार्रवाई की जा सके।

फतेहाबाद। फेसबुक विज्ञापन फ्रॉड मामले में गिरफ्तार युवक।

जेल लोक अदालत में एक विचाराधीन बंदी रिहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश दीपक अग्रवाल के मार्गदर्शन में केंद्रीय जेल 2 हिसार में जेल लोक अदालत का आयोजन हुआ। लोक अदालत की अध्यक्षता जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी गायत्री ने की। विभिन्न अदालतों में लंबित तीन मामले रखे गए जो एक केस में एक बंदी को रिहा किया गया। इस मामले में एक बंदी को सजा मुक्त कर दिया गया। सीजेएम गायत्री ने बताया कि जेल लोक अदालत हर महीने लगाई जाती है जिसमें केसों का निपटारा मौके पर ही जिला कारागार में ही किया जाता है। जेल लोक अदालत का उद्देश्य विचाराधीन बंदियों को न्याय दिलाने में तेजी लाना और उन्हें विशिष्ट श्रेणियों के मामलों में कानूनी राहत प्रदान करना है। फतेहाबाद जिले में अपनी जेल नहीं है इसलिए केंद्रीय जेल 2 हिसार में फतेहाबाद व हिसार दोनों जिलों के लिए सुधारात्मक सुविधा के रूप में कार्य करती है।

विचाराधीन महिला कैदियों बारे की पूछताछ

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी गायत्री ने बताया कि जेल लोक अदालत के दौरान तीन मामलों की समीक्षा की गई जिसमें एक केस में आरोपी की रिहाई हुई है। जो विचाराधीन बंदी भारतीय न्याय संहिता की धारा 303(2) पुलिस स्टेशन शहर टोहाना के तहत दर्ज है। उन्होंने बताया कि जेल लोक अदालत छोटे अपराधों और समझौता योग्य आपराधिक मामलों से संबंधित मामलों को सुलझाने के लिए एक प्रभावी न्यायिक मंच के रूप में कार्य करती है। जेल लोक अदालत कानूनी सहायता को बढ़ावा देने, समय पर न्याय सुनिश्चित करने और न्यायिक प्रणाली में जनता के विश्वास को मजबूत करने की एक महत्वपूर्ण पहल है। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी गायत्री ने जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया। सीजेएम ने विचाराधीन महिला कैदियों बारे जेल प्रशासन से पूछताछ की। उन्होंने विचाराधीन महिला कैदियों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली।

अब सीआईए सिरसा टीम करेगी चोरी के मामले की जांच

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

- सत्यम इंटरप्राइजेज में लाखों रुपए की ताम्बे की तार और अन्य सामान की चोरी

शहर के स्काउट चौक स्थित सत्यम इंटरप्राइजेज पर लाखों रुपए की ताम्बे की तार और अन्य सामान की चोरी की वारदात को सुलझाने का जिम्मा अब सीआईए सिरसा की टीम को दिया गया है। इस घटना में पीड़ित दुकानदार जितिन गोयल का करीब 15-20 लाख रुपए का नुकसान हुआ था। इस मामले में पहले सिटी थाना सिरसा में अभियोग नंबर-481 दर्ज करके जांच शुरू की गई थी। काफी समय तक इस घटना में संलिप्त आरोपियों का सुराग नहीं लगने पर नवनियुक्त पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण द्वारा मामले की गंभीरता को देखते हुए चोरी की इस वारदात की जांच और चोरों को पकडऩे का जिम्मा सिरसा सीआईए पुलिस टीम को सौंपा गया है, जिससे पीड़ित दुकानदार को भी अब न्याय की आस जगी है। इसी कड़ी में पीड़ित दुकानकार जितिन गोयल ने बताया कि सिरसा पुलिस की सीआईए टीम ने 7 नवंबर 2025 को घटनास्थल पर पहुंचकर वारदात का जायजा लिया और वारदात के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दुओं की बारीकि से जांच की। सीआईए टीम ने कुछ दिन पहले सत्यम इंटरप्राइजेज के पड़ोस में भी हुई चोरी की वारदात की भी गहनता से पड़ताल की। पीड़ित दुकानदार जितिन गोयल ने बताया कि उन्हें विश्वास है कि जल्द से जल्द पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण के नेतृत्व में सीआईए टीम द्वारा चोरी की वारदात को ट्रेस करके चोरों की धरपकड़ की जाएगी और हमारे चोरी हुए सामान की भी जल्द से जल्द रिकवरी सीआईए टीम द्वारा करवाई जाएगी।

स्टार्म वॉटर प्रोजेक्ट के तहत गली उधेड़कर भूला नगर परिषद

सिरसा। लाखों रुपये की लागत से तैयार की गई इंटरलॉक टाइलों वाली गली को करीब पांच माह पहले बरसाती पाइप लाइन बिछाने के लिए उधेड़ा गया था। अनाज मंडी रोड से सीएमके कालेज को जाने वाली पुराने यूको बैंक वाली गली को उधेड़कर अपने हाल पर छोड़ दिया गया। जिसके कारण न केवल गली निवासी परेशान है बल्कि इस गली से आने-जाने वाले सीएमके कालेज की छात्राएं और अध्यापक भी परेशान है। ए-ब्लॉक निवासी एडवोकेट कपिल गर्ग ने सीएम हरियाणा व स्थानीय निकाय विभाग के आयुक्त को मामले से अवगत करवाते हुए तोड़ी गई गली को पुनः बनाने की मांग की है। कपिल गर्ग ने बताया कि करीब पांच माह पहले इंटरलॉक वाली गली को उधेड़ा गया। स्टार्म वॉटर प्रोजेक्ट के तहत पाइप बिछाने के बाद इंटरलॉक टाइलों को फिर से नहीं बिछाया गया है, जिसके कारण लोग परेशानी झेल रहे है। उन्होंने बताया कि बरसात के समय में गली के कच्चे एरिया में फिसलन से दुर्घटना का भय बना रहता है।

लाठी-डंडों से हमले के आरोपी को किया काबू

आरोपी को न्यायालय में पेश कर हिरासत में भेजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

लाठी-डंडों से हमला कर स्कूटी छीनने के मामले में शहर टोहाना पुलिस ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोनू पुत्र अंग्रेज सिंह, निवासी वार्ड नं. 14, गीता कॉलोनी, टोहाना के रूप में हुई है। आरोपी को पुलिस ने न्यायालय में पेश किया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। थाना शहर टोहाना प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि यह मामला शिकायतकर्ता सुरेंद्र पुत्र बलवान निवासी रत्ताखेड़ा, तहसील टोहाना द्वारा दर्ज करवाई गई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि 12 सितम्बर को वह अपने गांव से बैटरी स्कूटी पर टोहाना सामान लेने जा रहा था। इसी दौरान केएम सरस्वती स्कूल के पास आरोपी मोनू अपने दो साथियों के साथ रॉड और डंडे लेकर पहुंचा।

पुराने झगड़े की रंजिश के चलते की मारपीट

पुराने झगड़े की रंजिश के चलते मोनू ने शिकायतकर्ता के पैरों पर वार किया और अन्य दो युवकों ने कमर पर हमला किया। इसके बाद आरोपी मोनू शिकायतकर्ता की बैटरी स्कूटी छीनकर फरार हो गया। जब शिकायतकर्ता पीछा करते हुए बस अड्डा टोहाना पहुंचा, तो वहां भी तीनों आरोपियों ने मिलकर उसके पैरों और शरीर पर वार किया और धमकी दी कि आज तो छोड़ दिया है, अगली बार जान से मार देंगे। आरोपियों ने जाते-जाते शिकायतकर्ता की एक सोने की कान की मुर्की भी छीन ली। घायल सुरेंद्र को राहगीरों ने सरकारी अस्पताल टोहाना में भर्ती करवाया, जहां से उसे उपचार हेतु एमएएमसी अग्रोहा मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। इस मामले में पुलिस ने 13 सितम्बर को केस दर्ज कर मुख्य आरोपी मोनू को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

1.10 लाख की ठगी करने वाले को किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फर्जी फेसबुक आईडी बनाकर 1 लाख 10 हजार रुपये ठगने के मामले में जिले की जाखल पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान नितिन कुमार बैरवा पुत्र मुकेश कुमार बैरवा, निवासी टाटिया थैलावास, गुड़ा कटला, जिला दौसा, राजस्थान के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी से 2200 रुपये नगद बरामद की। थाना जाखल प्रभारी उपनिरीक्षक सुरेश ने बताया कि शिकायतकर्ता सतपाल सिंह पुत्र गुरदयाल सिंह निवासी उदयपुर, जिला फतेहाबाद ने शिकायत दर्ज करवाई कि 5 अगस्त को किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनके बेटे जगदीप सिंह, जो कनाडा में रहता है, के नाम से फर्जी फेसबुक आईडी बनाकर ठगी की। आरोपी ने खुद को उनके बेटे के रूप में प्रस्तुत कर बताया कि उसे कनाडा में एजेंट को एक लाख 10 हजार रुपये देने हैं और यदि पैसे नहीं दिए तो उसका वीजा रद्द करवा देगा।

टीम ने नशे की चपेट में आए युवाओं और नागरिकों से की मुलाकात

रत्ताखेड़ा व रतिया में 9 ड्रग पीड़ितों की काउंसलिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। गांवों में जागरुकता अभियान चलाती जिला पुलिस की नशामुक्ति टीम।

जिला पुलिस की नशामुक्ति टीम द्वारा एसआई सुंदर के नेतृत्व में गांव रत्ताखेड़ा और रतिया का दौरा किया गया। टीम ने नशे की चपेट में आए युवाओं और नागरिकों से मुलाकात कर उन्हें पुनर्वास एवं नशामुक्त जीवन की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया। अभियान के दौरान गांव रत्ताखेड़ा के 4 तथा रतिया के 5 ड्रग पीड़ित व्यक्तियों को चिन्हित किया गया। सभी की काउंसलिंग की गई और उनकी मानसिक एवं शारीरिक स्थिति के अनुसार आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक औषधियां उपलब्ध कराई गई।

टीम सदस्यों ने पीड़ितों को जागरूक करते हुए बताया कि नशा व्यक्ति के जीवन, परिवार और समाज—तीनों को धीरे-धीरे खत्म कर देता है। नशा मुक्ति टीम ने गांव की गलियों और सार्वजनिक स्थलों पर आम नागरिकों से भी संवाद किया। ग्रामीणों को बताया गया कि नशे का कारोबार समाज के लिए एक गंभीर खतरा है, और यदि किसी को इस संबंध में कोई जानकारी मिले तो तुरंत पुलिस को सूचित करें। उपस्थित ग्रामीणों ने भी नशा उन्मूलन की इस मुहिम में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। एसआई सुंदर ने बताया कि ऑपरेशन जीवन ज्योति के अंतर्गत जिलेभर में नशा पीड़ितों की पहचान, काउंसलिंग और उपचार की प्रक्रिया निरंतर जारी है। पुलिस विभाग का उद्देश्य केवल नशे की सप्लाई चेन को तोडऩा नहीं, बल्कि पीड़ितों को सामान्य और सम्मानजनक जीवन में वापस लाना भी है।

खबर संक्षेप

महिला उद्यमिता पर सेमिनार आयोजित

सिरसा। राजकीय नेशनल महाविद्यालय में महिला उद्यमिता और महिला उद्यमिता के लिए वित्तीय योजनाएं विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के लोकसंपर्क अधिकारी प्रो. रमेश सोनी ने बताया कि कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. अंजू गोयल ने महिला उद्यमिता का महत्व, स्व-रोजगार के अवसर, सरकार द्वारा संचालित विभिन्न वित्तीय योजनाओं की जानकारी दीद्य वक्ता ने महिला उद्यमिता की भूमिका पर कहा कि आज महिला केवल गृहणी नहीं बल्कि रोजगार सर्जक बन रही है।

गुलक चोरी करने वाले युवक को पुलिस ने दबोचा

फतेहाबाद। गांव रत्ताखेड़ा स्थित लखदाता पीरखाना से गुलक चोरी करने के मामले में रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक की पहचान सोनू उर्फ सोनी पुत्र चना राम निवासी लखीवाला, थाना बोहा के रूप में हुई है। थाना शहर रतिया प्रभारी उपनिरीक्षक रणजीत सिंह ने बताया कि 22 अक्टूबर को गांव रताखेड़ा निवासी जग्गा राम पुत्र मुंदर राम, जो गांव स्थित लखदाता पीरखाना में सेवादार हैं, ने शिकायत दर्ज करवाई थी कि उनके दानपात्र को अज्ञात व्यक्ति ने चोरी कर लिया। चोरी का समय लगभग 1:40 बजे दिन में सीसीटीवी फुटेज में देखा गया। शिकायत के अनुसार, चोरी गए गुलक में करीब 20 हजार रुपये नकद और लगभग 22 तोले चांदी के कंगन थे। पुलिस ने तुरंत मामला दर्ज कर जांच शुरू की। इस संबंध में थाना शहर रतिया में 7 नवंबर को धारा 305, 331(3) भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया गया था।

बाइक चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। मोटरसाइकिल चोरी के एक मामले में रतिया पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान जगसीर सिंह उर्फ लादेन पुत्र बुध सिंह निवासी गामीवाला, थाना बोहा, पंजाब के रूप में हुई है। इससे पहले इस मामले में एक अन्य आरोपी को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। थाना शहर रतिया प्रभारी उपनिरीक्षक रणजीत सिंह ने बताया कि 18-19 अप्रैल 2025 की रात को शिकायतकर्ता गुरप्रीत सिंह पुत्र मलकीत सिंह ने शिकायत दर्ज करवाई थी कि उनके घर में खड़ी मोटरसाइकिल चोरी हो गई है। पुलिस ने तत्परता से जांच आरंभ की। मौके का निरीक्षण कर सीन ऑफ क्राइम टीम द्वारा साक्ष्य एकत्र किए गए।

बाबा खेतरपाल व माता मसानी का दिवान 14 को

रतिया। बाबा खेतरपाल व माता मसानी का 5वां विशाल दिवान व भंडारा 14 नवंबर को गांव जल्लोपुर के बाबा खेतरपाल मंदिर में बड़ी धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए मंदिर के मुख्य सेवादार सुमित नापा ने बताया है कि हर साल की तरह इस साल भी गांव जल्लोपुर में बाबा खेत्रपाल व माता मसानी का विशाल दीवान व भंडारा बड़ी धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। प्रसिद्ध गायक सरदार चन्नू व हनुमानगढ़ से सुप्रसिद्ध सूफी गायक, गुरसेवक अली अपने भजनों रौनक बढ़ाएंगे।

अस्पताल में उपचार के लिए पहुंच रहे लोग, बुजुर्ग भी बीमार

सुबह-शाम की ठंड बच्चों पर भारी अस्पताल में 15% बढ़ी ओपीडी

फतेहाबाद। नागरिक अस्पताल में उमड़ी मरीजों की भीड़।

फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

बीते कई दिन से क्षेत्र में सुबह-शाम ठंड होने लगी है। इसके बावजूद अभिभावक बच्चों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, जिससे उनकी सेहत पर असर पड़ रहा है। स्थिति यह है कि सिविल अस्पताल की ओपीडी में करीब 15 प्रतिशत बच्चों में ठंडी, उल्टी व पेट में दर्द का प्रकोप देखा गया है। इसके अलावा बच्चों से लेकर महिलाओं व बुजुर्गों में 40 फीसदी खांसी, जुकाम व बुखार के मरीज आ रहे हैं। इस पर चिकित्सक उन्हें दवा देने के अलावा बदलते मौसम में बचाव की सलाह दे रहे हैं।

फतेहाबाद में बीते कई दिनों से तापमान में बदलाव हो रहा है। बीते मंगलवार को हुई बरसात के बाद से ही तापमान लुढकना शुरू हो गया था। इन दिनों अधिकतम तापमान 26 और न्यूनतम 11 डिग्री सेल्सियस तक हो रहा है। हालांकि दिन में धूप निकलने के चलते हल्की गर्मी महसूस हो रही है, लेकिन शाम होने के बाद ठंड हो जाती है। इस मौसम में चिकित्सकों द्वारा लोगों को विशेष ध्यान रखने की सलाह दी जा रही है। इसके बावजूद लोग दिन में ठंडे पानी का सेवन हैं और रात को तेज स्पीड में पंखा चलाते है, इसी के चलते वे बीमार हो रहे हैं। सिविल अस्पताल में इन दिनों 500 से अधिक मरीजों की ओपीडी हो रही है। सुबह से ही ओपीडी के बाहर मरीजों लाइन लग रही है। इनमें 15 प्रतिशत बच्चों को ठंड, उल्टी व पेट दर्द की समस्या मिल रही है। वहीं 40 प्रतिशत लोग खांसी, जुकाम व बुखार से ग्रस्त मिल रहे हैं। इसी के आधार पर चिकित्सक उनका इलाज करने के बाद ठंड में बचाव के तरीके बता रहे हैं।

प्रदूषण के कारण सांस के रोगी भी बढ़ रहे

चिकित्सकों के अनुसार इन दिनों प्रदूषण भी बढने लगा है। आगामी दिनों में यह और अधिक होगा। इससे सांस के मरीजों की अधिक समस्या बढ़ेगी। ऐसे में उनका धुआं, धूल व मिट्टी से बचाव रखना होगा। इसके साथ ही उन्हें केला, दही व लस्सी का सेवन बंद करना पड़ेगा, वहीं अधिक मसालों से बने खाने का भी परहेज करना होगा, जिससे वे प्रदूषण के चलते होने वाली समस्या से बचे रहेंगे।

पूरी तरह से कपड़े पहनकर निकलें

- बच्चों को सुबह व शाम को जुराबों के साथ पूरी बाजू के कपड़े पहनाएं।
- जंक फूड का सेवन न करने दें।
- गुनगुने पानी का सेवन कराएं।
- प्रदूषण को देखते हुए मास्क लगाकर घर से बाहर निकलें।
- स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होने पर तुरंत चिकित्सक की सलाह लें

खानपान में करें परिवर्तन

बीते कई दिन से मौसम में बदलाव आया है। इस मौसम में खानपान व पहनावे में परिवर्तन करें। इन बातों का ध्यान न देने पर ही बच्चे व अन्य लोग बीमार हो रहे हैं। अस्पताल में आने वाले मरीजों को इलाज की सुविधा दी जा रही है। वहीं उन्हें बीमारियों से बचाव के उपाय भी बताए जा रहे हैं।

- डॉ. बुधराम, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, सिविल अस्पताल, फतेहाबाद

9वें श्री अखंड पाठ का भोग श्रद्धापूर्वक डाला

ओढां। अखण्ड पाठ के भोग से पूर्व रागी जत्था कीर्तन करते।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ ओढां

धन गुरु नानक क्लब ओढ़ा द्वारा हर वर्ष की तरह गुरुपर्व के बाद मंडी वाली धर्मशाला में 9वें श्री अखंड पाठ का भोग शनिवार को डाला गया। इस अवसर पर कथावाचक भाई मंगत सिंह, भाई सुखचरण सिंह और साथियों ने शब्द कीर्तन और कथा विचारों से संगत को निहाल किया। उन्होंने बताया कि सिख धर्म के प्रथम गुरु नानक देव ने सिखाया कि ईश्वर एक है और वो हर जगह उपस्थित है। प्रभु का नाम सुमिरन करने से व्यक्ति के जीवन का अंधकार मिटता है और जीवन में सुख शांति आती है। नाम जप करने से व्यक्ति दया और प्रेम का पाठ सीखता है। उन्होंने सतगुरू नानक परगटेया मिटी धुंध जग चानन होआ और कलि तारण गुरु नानक आया आदि शब्द सुनाकर संगत को निहाल किया। भोग के बाद धन गुरु नानक क्लब के सदस्यों द्वारा कथा वाचक मंगत सिंह समेत सारी संगत का पहुंचने पर धन्यवाद किया। क्लब द्वारा लंगर की व्यवस्था की गई और सभी को पंक्तियों में बिठाकर गुरु का अटूट लंगर वरताया गया। क्लब के प्रधान लखी ओढ़ा ने बताया कि क्लब द्वारा गांववासियों के सहयोग से हर वर्ष अखण्ड पाठ करवाया जाता है। इस अवसर पर गांव के गणमान्य व्यक्ति, ग्राम पंचायत के सभी सदस्य, सामाजिक व धार्मिक संस्थान और सभी राजनैतिक पार्टियों के नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

श्री राधा कृष्ण मंदिर में भव्य मूर्ति स्थापना समारोह 10 नवंबर को

रतिया। श्री राधा कृष्ण मंदिर कमेटी रतिया द्वारा शक्ति नगर स्थित श्री राधा कृष्ण मंदिर में 10 नवंबर सोमवार को मूर्ति स्थापना समारोह आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत 6 नवंबर को पूरी विधि-विधान से मंत्र उच्चारण के साथ पंडित कपिल कृष्ण बृजवासी की टीम द्वारा पूजा अर्चना के साथ हो चुकी है। इस समारोह की अध्यक्षता शक्ति नाटक क्लब रतिया के प्रधान राजेश सेतिया द्वारा की जाएगी। इस भव्य समारोह में श्री खाटू श्याम जी, शिवलिंग एवं शिव परिवार, श्री राधा कृष्ण जी, श्री हनुमान जी और श्री राम दरबार की मूर्ति की स्थापना की जाएगी, जो श्रद्धालुओं के लिए एक अद्भुत अवसर होगा। समारोह के दौरान प्रतिदिन पूजा होती है।

आदर्श स्कूल दरियापुर में एक दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का आयोजन, कई स्कूलों के शिक्षक हुए शामिल

- छात्रों में लाइफ स्किलस को विकसित करने पर जोर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दरियापुर ने लाइफ स्किलस पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया, जिसका नेतृत्व आनंद शर्मा व रोहताश सिंह ने किया। इस सत्र का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाना था।

स्कूल शिक्षकों के अलावा अन्य विद्यालयों के शिक्षकों ने भी इस सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया और छात्रों में लाइफ स्किलस को विकसित करने के तरीकों पर चर्चा की। शिक्षकों को बताया गया कि वे अपने दैनिक शिक्षण में विभिन्न गतिविधियों और परियोजनाओं को शामिल करके छात्रों में लाइफ स्किलस को विकसित कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण सत्र से शिक्षकों को छात्रों में संचार कौशल, समस्या-समाधान क्षमता, और टीम वर्क जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशलों को विकसित करने में मदद मिलेगी। इससे छात्रों को अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

फतेहाबाद। आदर्श स्कूल दरियापुर में आयोजित प्रशिक्षण सत्र में भाग लेते शिक्षक।

भविष्य की चुनौतियों के लिए शिक्षा अहम

स्कूल प्रबंधकों ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि छात्रों को जीवन के लिए तैयार करना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस सत्र से शिक्षक इस दिशा में और भी मजबूत बनेंगे और हमारे छात्रों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेंगे। इस प्रशिक्षण में 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल दरियापुर के अलावा आर्मी स्कूल हिसार, रॉयल पब्लिक स्कूल बहबलपुर, गांधी विद्या मंदिर स्कूल फतेहाबाद ने भाग लिया।

शूरसैनी जयंती महासम्मेलन को लेकर चलाया जनसंपर्क अभियान

- 16 को नारनौल में आयोजित किया जाएग कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

आगामी 16 नवम्बर को नारनौल में आयोजित होने वाले महाराजा शूरसैनी जयन्ती महासम्मेलन के लिए सैनी महापंचायत के प्रदेश सचिव बलदेव सैनी ने आज जनसम्पर्क अभियान चलाते हुए समाज के लोगों को निमंत्रण दिया। उन्होंने बताया कि यह आयोजन समाज के महापुरुषों के प्रति श्रद्धा, आस्था और एकता का प्रतीक होगा। बलदेव सैनी ने कहा कि इस सम्मेलन में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर समाज को संबोधित करेंगे। उन्होंने कहा कि महाराजा शूरसैनी हमारे समाज के आदर्श हैं, जिन्होंने न्याय, समानता और पराक्रम के मार्ग पर समाज को अग्रसर किया। उनके बताए मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। इस अवसर पर सैनी महापंचायत के जिलाध्यक्ष जयभगवान सैनी, सैनी सभा टोहाना के प्रधान कृष्ण सैनी सहित अन्य मौजूद रहे।

फतेहाबाद। महासम्मेलन को लेकर जनसम्पर्क अभियान चलाते समाज के लोग।

श्री सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय में विद्यार्थियों को वितरित की छात्रवृत्ति

- मेधावी विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

श्री सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय में जिला के गणमान्य लोगों द्वारा विद्यार्थियों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति के लिए एक आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में हरिओम भारद्वाज उपस्थित रहे। उन्होंने आज अनेक विद्यार्थियों को अपने हाथों से 3100-3100 रुपए प्रत्येक छात्र को छात्रवृत्ति प्रदान की। इस मौके पर महाविद्यालय के प्रधान सुरेंद्र बंसल एडवोकेट उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि जिला के लगभग 86 गणमान्य लोगों द्वारा प्रतिवर्ष जरूरतमंद विद्यार्थियों को 3100 व 5100 की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उन्होंने इस मौके पर सभी 86 छात्रवृत्ति दान-दाताओं का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद किया। प्राचार्य गणेश शंकर ने कहा कि इस छात्रवृत्ति से जरूरतमंद बच्चों को शास्त्री की शिक्षा ग्रहण करने में सहायता मिलती है। इससे वह आगे बढ़ते है।

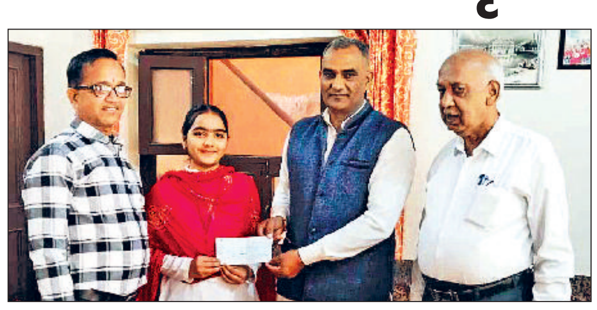

सिरसा। विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरित करते हरिओम भारद्वाज।

डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य के लिए घातक

- फास्ट फूड व मीठे पदार्थ खाने से परहेज करें : डॉ. संदीप भादू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ ओढां

गांव जलालआना में शाह सतनाम जी स्पेशलिटी हॉस्पिटल की ओर से एक दिवसीय निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मरीजों के स्वास्थ्य की जांच करके उन्हें निशुल्क दवाइयां एवं उचित परामर्श दिया। शिविर में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए सामान्य रोग विशेषज्ञ डॉ. संदीप भादू ने कहा कि इस समय हर गांव में डेंगू के केस बढ़ रहे हैं। इसलिए स्वास्थ्य की तरफ ध्यान देते हुए किसी तरह की ढिलाई न बरतें। अगर कुछ दिनों तक बुखार व जोड़ों में दर्द रहता है तो चिकित्सकों से सम्पर्क करें। जब भी टेस्ट करवाएं तो अकेले प्लेटलेट्स टेस्ट करवाने की बजाय लिवर के सभी टेस्ट करवाएं। वहीं उन्होंने डेंगू के प्रति सावधानी बरतने की अपील करते हुए कहा कि अपने आसपास के वातावरण को साफ रखें, पानी को जमा न होने दें और अगर बुखार है तो इसे अनदेखा न करें।

ओढां। गांव जलालआना में आयोजित शिविर में मरीज की जांच करते चिकित्सक।

ब्लड प्रेशर व शुगर की अनदेखी न करें

उन्होंने ब्लड प्रेशर व शुगर बारे कहा कि इन्हें लंबे समय तक अनदेखा न कर समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच करवाएं। उन्होंने कहा की डिब्बा बंद व ज्यादा मीठे खाद्य पदार्थ खाने से परहेज करें तथा दिनचर्या में योगाभ्यास जरूर करें व डाइट में हरी सब्जियों का इस्तेमाल अधिक करें। अकेले गेहूं के आटे की बजाय उसमें अन्य अनाज का भी मिश्रण अवश्य करें। नेत्र विभाग से मुकेश कुमार ने कहा कि आंखों के मामले में किसी प्रकार की अनदेखी न करें और ना ही अपनी मर्जी से बिना जानकारी के आंखों में दवा डालें। आंखे प्रकृति का बेहद ही अमूल्य उपहार है।

डीएवी में स्पोर्ट्स मीट- बच्चों ने खेलों में दिखाई प्रतिभा

दीपिका और अर्शदीप ने लगाई सबसे लंबी छलांग

कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के डायरेक्टर राकेश मेहता व अन्य ने मिलकर किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को लेकर डीएवी स्कूल नागपुर में स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। स्कूल के खेल कोच सुखचैन सिंह की देखरेख में आयोजित इस स्पोर्ट्स मीट में विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों में उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के डायरेक्टर राकेश मेहता, प्रिंसीपल रंजू मेहता व कोर्डिनेटर सलोनी ग्रोवर ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका चांदनी ने किया। स्पोर्ट्स मीट के दौरान दौड़, रस्साकशी, लेमन रेस, हरडल दौड़, लोंग जम्प, फॉग रेस, रिले रेस, खो-खो, एथलेटिक्स सहित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रिंसीपल रंजू मेहता ने कहा कि स्पोर्ट्स मीट के आयोजन विद्यार्थियों में टीम भावना, अनुशासन और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देते हैं वहीं विद्यार्थियों में शिक्षा के तनाव को कम करने में भी सहायक है। उन्होंने कहा कि खेल विद्यार्थियों को स्वस्थ रखने और उनके सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं। इससे छात्रों में मिलजुल कर काम करने और एक-दूसरे का सहयोग करने की भावना विकसित होती है। उन्होंने प्रतियोगिताओं में विजेता रहे विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की। शिक्षिका चांदनी ने बताया कि लड़कियों की 200 मीटर रेस में दीपिका, लडक्रों में जगदीश, 400 मीटर दौड़ लड़कियों में दीपिका व लडक्रों में जश्नदीप, रिले रेस में अर्शदीप, लोंग जम्प लड़कियों में दीपिका व लडक्रों में अर्शदीप, फॉग रेस लड़कियों में भारती व लडक्रों में सार्थक, बॉल कॉलेक्ट लड़कियों में जैसमीन व लडक्रों में सहज सिंह ने बाजी मारी।

रतिया। डीएवी स्कूल नागपुर में आयोजित खेल प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी।

सूक्ष्म शिक्षण कौशल पर ओरिएंटेशन कार्यक्रम, विद्यार्थियों को दिए टिप्स

- सूक्ष्म शिक्षण कौशल बीएड के पाठयक्रम का एक जरूरी हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण कौशल पर ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. पूनम मिगलानी ने कहा कि सूक्ष्म शिक्षण कौशल पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों को प्रशिक्षित कर छात्रध्यापकों में शिक्षण कौशल विकसित करने की एक तकनीक है।

जिसके माध्यम से छात्रों को एक कुशल अध्यापक बनाया जा सकता है। इंचार्ज मीनू वर्मा ने छात्रों को सूक्ष्म शिक्षण के बारे में बताते हुए कहा कि सूक्ष्म शिक्षण कौशल बीएड के पाठयक्रम का एक जरूरी हिस्सा है जिसके माध्यम से हम छात्रों को अच्छी तरह से एक सफल शिक्षक बनाना सिखाते हैं। इसके द्वारा अध्यापक किसी एक शिक्षण कौशल कम समय में छोटे समूह को पढाकर अभ्यास कर सकता है और पांच से सात मिनट के पाठ में किसी एक प्रकरण का अध्यापन पांच से दस बच्चों के समूहों मे किया जाता है। इससे बच्चों को फायदा होता है।

सिरसा। कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी।

विशेषः बाल दिवस 14 नवंबर

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियां हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को सहेजना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर-एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियां हैं, जिन्हें शायद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल इंसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप इंसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खुला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अधेड़ भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बेफिक्र होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जाएंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बच्चों के बीच न पनपे असमानता

डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटाने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर इंसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर इंसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाना भी सफल होगा। *

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके स्वास्थ्य को लेकर सहानुभूति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैल्यू एडिशन करने की क्षमता पाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भौतिक प्रतिस्पर्धा करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत नौकरियां बदल जाएंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी क्रिएटिविटी और कोलेब्रेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।

दायित्व
डॉ. अनिता राठौर

बचपन से किशोरावस्था तक बच्चों के जीवन में सबसे बड़ी भूमिका पैरेंट्स और टीचर्स की होती है। ऐसे में बच्चों के बेहतर, तनावरहित और उज्ज्वल भविष्य के लिए दोनों को उनकी जरूरतों और समस्याओं को गंभीरता से समझना होगा।

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकताः जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम्स गैदरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में डूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएं तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मनःस्थितिः आज के बच्चों की मनःस्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीकी के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने खांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है। आज के बच्चे 'डिजिटल नेटिव्स' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डांटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतेंः एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी का मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इस्त्री) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

जी लेने दें बच्चों को बचपनः आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रुचियों के मुताबिक जीने और बचपने का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपने की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

गजल
प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर
वही दिखने लगा है आज-कल अखबार के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निभाता है
मुसीबत छह दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना
ये हम परिवार के अंदर हैं या बाजार के अंदर

वहां रिश्तों की खिड़की पर हैं कितने कीमती पर्दे
घुटन महसूस होती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शीशे के जैसे मत समझ लेना
बहुत चुभता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ
बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत होते हैं ये मजबूरी के कांधे भी
जो पूरा गांव ढो कर रख गए बाजार के अंदर

मोबाइल का बवाल

व्यंग्य / विनय मोघे

सत्तर वर्षीय ख्यालीराम का परिवार चिंतित है, क्योंकि ख्यालीराम ने अन्न-जल त्याग देने की घोषणा कर दी है। कारण यह है कि घरवालों ने उनका मोबाइल उनसे ले लिया है। अब उनका फेसबुक, व्हाट्सएप सब बंद है। दुनिया से उनका संपर्क टूट गया है, इसीलिए उन्होंने अन्न-जल से अपना, संपर्क तोड़ लेने की ठान ली है।

दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनके बेटे ने उनके जन्मदिन पर उन्हें अच्छा वाला स्मार्टफोन दिलाया था। उनके पौत्रों ने उनके मोबाइल पर कई सारे एप्स डाउनलोड कर दिए थे। ख्यालीराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कांपते हाथों और कमजोर नजरों से ख्यालीराम उन एप्स का उपयोग करने लगे। बस यहीं से उनकी और उनके परिवार की परेशानी का सिलसिला शुरू हो गया।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो उनके कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। साथ ही में RIP की जगह दो बार PIP-PIP भी लिख दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप नहीं कर पाते तो कॉपी पेस्ट कर दिया करते। ऐसे में कभी एनिवर्सरी के उनके संदेश में अक्सर पति-पत्नी की जोड़ी बदल जाती थी। पतियों को शायद उनका ऐसा करना अच्छा लगता हो पर पत्नियां नाराज हो उठती थीं। उनकी गलतियों से बचने के लिए उनके दोनों पौत्रों ने उन्हें वॉइस मैसेज भेजने का आइडिया सुझाया। एक बर्थ-डे पर उन्होंने जो वॉइस मैसेज भेजा, जिसमें सिर्फ उनके खांसने की आवाज और दो बार 'हे राम, ये खांसी तो मार ही डालेगी मुझे।' सुनाई दिया। पूरे मैसेज में बर्थ-डे का जिक्र कहीं नहीं हुआ।

फेसबुक पर अपने पुराने मित्रों, सहेलियों को ढूंढने के चक्कर में उनके नाम से मिलते-जुलते नाम वाले कई लोगों को अपना मित्र बना लिया था। कुछ ही दिनों में उनके मित्रों की कुल संख्या सैकड़ा पार कर गई थी, जिनमें असली मित्र बहुत ही कम थे। कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण उनके फेसबुक मित्रों की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही थी। एक दिन किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप पर उनके कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण 43 इंच एलईडी टीवी ऑर्डर हो गया, वो भी 'कैश ऑन डिलीवरी।' जिस दिन यह घटना हुई, उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दें या मोबाइल? *

एआई इमेज

लघुकथा / बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

बड़ा आदमी

सुभाष के बारह वर्षीय बेटे राहुल ने मचलते हुए कहा, 'पापा, मुझे बड़ा आदमी बनना है।'

'इस सीढ़ी पर चढ़कर बैठ जा।' सुभाष ने दीपावली की सफाई के लिए निकाली गई सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए मजाकिया ढंग से कहा।

राहुल भी हंसी-हंसी में सीढ़ी के तीन डंडों पर चढ़कर ऊपर बैठ गया।

पिता ने पहले अपने और फिर उसके सिर पर हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बड़े बने हो।'

राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।'

'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूंढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।'

राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूंगा?'

'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम करता था तो उसे बड़ा आदमी माना जाता था। आज के जमाने में किसी व्यक्ति के आस-पास के लोगों को व्यवहार देखकर यह जाना जाता है।' सुभाष ने बताया।

'उस व्यक्ति के बजाय उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार देखकर पहचाना जाएगा कि वह कितना बड़ा आदमी है?' राहुल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां!' पिता सुभाष ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'कोई आदमी कहीं पहुंचे तो उसे आता देखकर वहां बैठे सारे लोग खड़े हो जाएं, वह आकर बैठ जाए तो सभी बैठ जाएं, वह आदमी चलने के लिए उठकर खड़ा हो तो शेष लोग भी खड़े हो जाएं, उसे छोड़ने बाहर तक जाएं, तब समझो कि वह बड़ा आदमी है।' *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती हैं 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व स्त्री की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दांपत्य प्रेम की अनूठी बानगी है। एक डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हैरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचेता स्त्री के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गर्माहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिघलती बर्फ', 'जी ले जरा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तकः पा की डायरी (कहानी संग्रह), **लेखिकाः** आशा शर्मा, **मूल्यः** 260 रुपए, **प्रकाशकः** समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली

सेलिब्रेशन / शिखर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अनोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेंस-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेक्कु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और गोगात्सु-निंग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेलमेट है, जो अकसर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निंग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुड़िया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोइनोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं। जापानी में, कोइ का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार की मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ओलंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्वारो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिड़ियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश होता है। कुछ रेडियो और टेलीविजन प्रोग्राम होस्ट करने वाले बच्चों को अपने शो में बुलाते हैं।

यूरिनी नाल, दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया में बाल दिवस पर्व को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन आयोजित होने वाले समारोहों में परेड, तमाशा, पार्टियां, पिकनिक और ताइक्वांडो प्रदर्शन शामिल हैं। इस सूची में पर्वतीय पद यात्राएं, नदी किनारे तंबू लगा कर रहने और मौज मस्ती करने जैसी गतिविधियां भी शामिल हैं। इस मौके पर बच्चे पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और परिवार के साथ संग्रहालयों, पार्कों में मस्ती करने और फिल्म देखने जाते हैं। कई जगहों पर इस खास दिन के लिए बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगो ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों के स्ट्रिप्स), सोलोंगटैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुत्फ भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एर्तोंग जिए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।

इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है।

अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव / धीरज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो

होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है।

सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने,

रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वर्चुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतरंगी तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है।

गाइडेंस / कीर्तिशेखर

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सक्सेसफुल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी

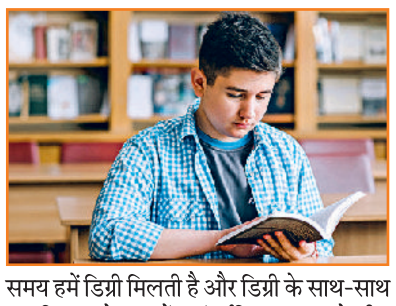

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्ट्रीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्ट्रीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

कॉलेज/स्नातक (16 से 23 साल): करियर के लिए हमारी जिंदगी में असली और सर्वाधिक सीरियस होने का यही समय होता है, क्योंकि इसी समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम स्किल डेवलपमेंट, इंटर्नशिप या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।

युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें ज्यादा से ज्यादा अपने करियर के इस मोड़ पर फोकस करना चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर हमें सिर्फ करियर के लिए पढ़ाई पर ही ध्यान नहीं देना होता बल्कि नेटवर्किंग, अनुभव और सही अवसर पकड़ने की कोशिश पर होता है। क्योंकि अगर 23 से 30 के बीच हमारे करियर की दिशा अच्छी तरह से तय हो गई, तय होने के साथ-साथ इस दिशा में अगर हमने अपने आपको मजबूती से जमा लिया, तो आगे विकास और पदोन्नति आसान हो जाती है। यही वह उम्र है, जब हम एक करियर में रहते हुए इनकी मजबूती से तैयारी करते हैं। इसी उम्र में स्टार्टअप शुरू करना, अपने विषय विशेष पर रिसर्च करना या जॉब के साथ फ्रीलांसिंग के अवसर पकड़ना होता है। इसलिए उम्र का यह पड़ाव भी करियर के लिहाज से इंपॉर्टेंट होता है।

स्थिरता-विकास (31 से 40 साल): 31वें साल से लेकर 40वें साल तक हम अपने करियर को स्थिरता प्रदान करते हुए उच्च विकास की ओर आगे बढ़ते हैं। इस दौरान कई बार हमें पीएचडी की पढ़ाई करनी होती है। जॉब में लीडरशिप पाने के लिए मैनेजमेंट कोर्स या इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन की पढ़ाई करनी होती है। कुल मिलाकर इस उम्र में हम अपने करियर को मजबूती देकर विशेषज्ञता की ओर बढ़ते हैं और नेतृत्व हासिल करते हैं। इसलिए करियर के लिहाज से उम्र का यह पड़ाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि इस समय तक हमारे क्षेत्र विशेष में हमारी प्रोफेशनल पहचान बनने लगती है और हममें अपने क्षेत्र में स्थिरता हासिल करना जरूरी हो जाता है।

अनुभव का पूंजीकरण (40 साल के बाद): उम्र के इस पड़ाव में हमें अपनी अब तक की मेहनत के कई सुफल मिलते है। लेकिन कई बार हमें इस उम्र में अपना टेक्नोलॉजी स्किल बदलने नए सिरे से अपनी पढ़ाई में कुछ और जोड़ना होता है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए।

सिने ट्रेंड / डी. जे. नंदन

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्में भी कमाई के मामले में कमाल कर जाती हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन

'सैयारा' को मिली शानदार सफलता

साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा'

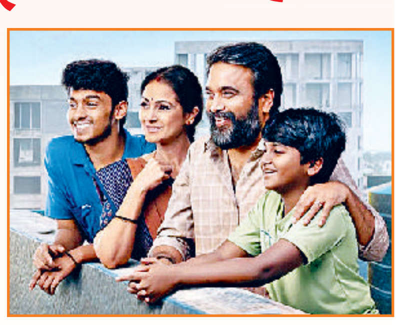

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पड्डा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

आमिर खान की 'सितारे जमीं पर' ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है, जिसने लगभग 300 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। राजकुमार राव अभिनीत 'भूलचूक माफ' महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने 90 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की थी।

'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन

बड़े बजट के बावजूद नहीं मिली सफलता: इस साल बड़े बजट की कई फिल्मों को लेकर कयास लगाए जा रहे थे कि वो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित होंगी। लेकिन इन बिग बजट फिल्मों ने निराश ही किया। अक्षय कुमार की 'स्काई फोर्स' खास कमाई नहीं कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो की मलयालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोट की 'इमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टारर फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है।

तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'ड्रैगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

मलयालम में बनी फिल्म 'थुडारम' ने बॉक्स आफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुझा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की।

'सितारे जमीन पर' ने भी की बढ़िया कमाई

तेलुगू भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वस्थुनम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की।

दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचने और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट की फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक है कि वे स्टार पावर के अलावा कहानियों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं।